सवैये

भाग – 4/4

रसखान

सवैये

समाधि स्थल

पूरा नाम : सैय्यद इब्राहीम (रसखान)
जन्म : सन् 1533 से 1558 बीच (लगभग)
जन्म भूमि : पिहानी, हरदोई जिला , उत्तर प्रदेश
कर्म भूमि : महावन (मथुरा)
कर्म-क्षेत्र : कृष्ण भक्ति काव्य
मुख्य रचनाएँ : 'सुजान रसखान' और 'प्रेमवाटिका'
विषय : सगुण कृष्णभक्ति
भाषा : साधारण ब्रज भाषा
विशेष योगदान : प्रकृति वर्णन, कृष्णभक्ति
अन्य जानकारी :
भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने जिन मुस्लिम हरिभक्तों के लिये कहा था, "इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिन हिन्दू वारिए" उनमें "रसखान" का नाम सर्वोपरि है।

सवैये

<u>चौथा सवैया</u> :

काननि दै अँगुरी रहिबो जबहीं मुरली धुनि मंद बजैहै।

मोहनी तानन सों रसखानि अटा चढ़ि गोधन गैहै तौ गैहै॥

टेरी कहौं सिगरे ब्रजलोगनि काल्हि कोऊ कितनो समुझैहै।

माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै॥

सवैये

शब्दार्थ :

कानन्हि – कानों में
दै – देकर
अँगुरी – उँगली
रहिबो – रहूँगी
धुनी – धुन
मंद – मधुर स्वर में
बजैहैं – बजाएँगे
मोहनी – मोहनेवाली
तानन – धुनों से
अटा – अटारी
गोधन – ब्रज क्षेत्र में गाया जाने वाला लोक गीत
गैहें – गाएँगे
टेरि– पुकार
सिगरे – सारे
काल्हि – कल
माइ री – हे माँ
वा – वह , उसके

सवैये

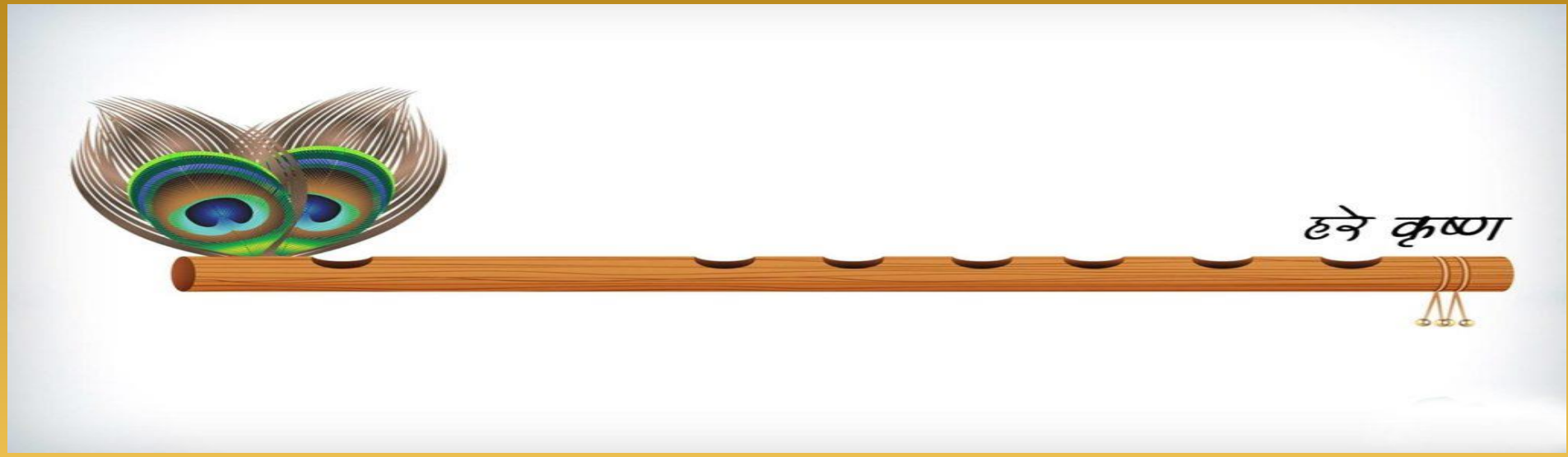

1. पैंतालिस साल की अवस्था में रसखान ने भगवान के दिव्य धाम की यात्रा की |
2. प्रेमदेवता राधारमण ने अंतिम समय में उनको दर्शन दिया था |
3. प्रेम के साम्राज्य में उनकी कृपा का दर्शन रसखान जैसे भक्तों के लिए ही संभव था |